ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)42-45
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

पूजा साह
शोधार्थी,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय (प्रयागराज)

Corresponding Author :

पूजा साह
शोधार्थी,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय (प्रयागराज)

गाँधी और हिंद स्वराज : आज की जरूरत

शोध-सार- 'हिंद स्वराज' महात्मा गाँधी की एक प्रमुख कृति है। इस पुस्तक में गाँधी जी ने जो विचार व्यक्त किया है उनमें से अधिकतर पर वे आजीवन अडिग रहें। इस पुस्तक में गाँधी ने जिस स्वराज की बात की है वहाँ किसी प्रकार की अतिशयता से बचने की बात है। उसमें जाति, धर्म, संप्रदाय आदि के प्रति किसी प्रकार का कोई द्वेषधर्म नहीं था। यह स्वराज आत्मनिर्भरता पर जोड़ देती है। सबके साथ सद्भाव की बात करती है। सहअस्ततित्व को प्राथमिकता देती है। गाँधी यहाँ आधुनिक सभ्यता के मशीनीकरण के विरोधी दिखते हैं। मशीनीकरण के तले मानवीयता दब न जाए इसकी उनको चिंता थी। गाँधी ने भले ही पर्यावरण की बात स्वतंत्र विषय के रूप में नहीं की है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से ही सही प्रकृति की चिंता इनके यहाँ दिखती है। आधुनिक सभ्यता के जिस विनाशकारी प्रभाव की बात या संकेत गाँधी जी ने किया था, उसका भयावह रुप आज हमारे सामने है। गाँधी के विचारों से पुर्ण रूप से सहमत होना न कल संभव था न आज है। तमाम असहमतियों के बावजूद भी उनको पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता। आज की भयावह स्थिति में चाहे वह धार्मिक, सांप्रदायिक या प्राकृतिक हो गाँधी हमारे सामने एक सही विकल्प के रूप में तो है ही। जोशीमठ आपदा के बाद या इस तरह तमाम प्राकृतिक आपदा के बाद गाँधी की चिंता अत्यंत सार्थक हो जाती है। आज विकास का अर्थ जिस आर्थिक विकास तक सीमित हो गया है वहाँ प्रकृति, पर्यावरण आदि का संकट हम देख सकते हैं। आर्थिक समृद्धि की बात जितनी तीव्र है आत्मिक समृद्धि की बात उतनी ही धीमी। सभ्यता के चकाचौंध में इंसानियत कहीं खोती नजर आ रही है। आधुनिक मूल्यों के स्थान पर जर्जरता, बर्बरता, प्रकृति दोहन में अतिशयता नजर आ रही है। गाँधी संसाधनों के उचित प्रयोग की बात करते हैं। ऐसे समय में गाँधी की प्रासंगिकता निःसंदेह है।

बीज शब्द- स्वराज, प्रेमधर्म, आत्मबलिदान, मशीनीकरण, सभ्यता, पर्यावरण, यंत्र, यांत्रिकता, आधुनिकता, आंतरिक समृद्धि, सर्वोदय, क्रिटिकल टैडिशनलिस्ट, आत्मसंयम, आत्मविस्तार।

'हिंद स्वराज' 1908 में महात्मा गाँधी ने मूलतः गुजराती भाषा में लिखा था जिसका अनुवाद बाद में कई भाषाओं में हुआ। अंग्रेजी भाषा में इसका अनुवाद स्वंय गाँधी ने 'होम रूल' नाम से किया था। 'हिंद स्वराज' लंदन में उनके मित्र और शुभचिंतक प्राणजीवन दास और जगजीवन दास से हुई

बातचीत की ज्यों की त्यों प्रस्तुति है। इसकी रचना गाँधी ने लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते समय की थी। सर्वप्रथम इसका प्रकाशन दक्षिण अफ्रीका के 'इंडियन ओपीनियन' में कुछ स्तंभों में हुआ। इसकी रचना गाँधी ने लगातार बढ़ रहे हिंसा को देखते हुए, हिंसा को अंतिम हथियार या इलाज न मानने के लिए प्रेरित और एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करने के लिए की। गाँधी ने इसकी भूमिका में लिखा है- "यह द्वेषधर्म की जगह प्रेमधर्म सिखाती है; हिंसा की जगह आत्मबलिदान को रखती है; पशुबल से टक्कर लेने के लिए आत्मबल को खड़ा करती है।"[1] गाँधी न केवल एक राजनीतिक नेता थे बल्कि दार्शनिक भी थे। आज के समय में जब चारों ओर हिंसा ही दिख रही है तब सुधीश पचौरी ने इस दौर को हिंसा नहीं 'हिंसाओं' का दौर कहा है। गाँधी को इस बात का भय बहुत पहले ही से था। धर्म, जाति और लिंग के नाम पर, कॉर्पोरेट घरानों में हर जगह हिंसा अपने विभिन्न रूपों में हमारे सामने मौजूद है। मनुष्य की हिंसक छवि आज बहुत ज्यादा सक्रिय है। तमाम तरह के युद्धों, आक्रमणों के दौर में शांति एक अच्छे स्वप्न की तरह हो गया है जबकि सच तो यह है कि दुनिया प्रेम से बची है युद्ध से नहीं। भारत को अंग्रेजी राज से आजादी दिलाने के लिए जहाँ एक तरफ गाँधी के पास राजनीतिक कार्यक्रम था, वहीं भारतीयता को बचाए रखने के लिए, भारत को तमाम विषमताओं से दूर रखने के लिए सामाजिक दर्शन भी था। भारतीयता के अस्तित्व को बचाए रखने की कोशिश इनमें थी। विभिन्न देश के खाद-पानी से अपने पेड़ को सींचने के बावजूद अपने फल में अपनी मिट्टी का स्वाद बचाए रखना उनकी चिंता के केंद्र में था। इसी चिंता का परिणाम और एक कोशिश के रूप में 'हिंद स्वराज' हमारे सामने है। गाँधी ने कई पुस्तकें लिखीं और कई पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। गाँधी का जीवन ही उनका दर्शन है। इनके यहाँ सिद्धांत और व्यवहार की दूरी बहुत कम है।

'हिंद स्वराज' गाँधी वाङ्मय की प्रमुख कृति है। इस पुस्तक में जहाँ एक तरफ भारत की ग्रामीण सभ्यता को सराहा गया है, उसकी सुरक्षा की बात बार-बार की गई है, वहीं मशीनीकरण का विरोध भी किया गया है। गाँधी ने लिखा है- "मैं मानता हूँ कि जो सभ्यता हिंदुस्तान ने दिखाई है, उसको दुनिया में कोई नहीं पहुँच सकता। जो बीज हमारे पुरखों ने बोये हैं, उनकी बराबरी कर सके ऐसी कोई चीज देखने में नहीं आई। रोम मिट्टी में मिल गया, ग्रीक का सिर्फ नाम रह गया, मिस्र की बादशाही चली गई, जापान पश्चिम के शिकंजे फंस गया और चीन का कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन गिरा-टूटा जैसा भी हो, हिंदुस्तान आज भी अपनी बुनियाद में मजबूत है।"[2] यहाँ गाँधी विभिन्न देशों की स्थिति बताते हुए, किसी देश की सभ्यता के प्रति अंध श्रद्धा से सचेत करते दिखाई पड़ते हैं। गाँधी को अपने देश की सभ्यता में अगाध विश्वास था जिसके मूल में त्याग, करुणा, संयम का भाव अधिक है, लेकिन आज परिस्थिति बहुत बदल गई है। पूंजीवादी सभ्यता का प्रभाव भारत पर इस कदर पड़ा है कि पूंजीवादी देशों की सभ्यता हम पर थोप दी गई है। इससे भारत का सांस्कृतिक स्वायत्ता बहुत हद तक खत्म होती दिख रही है। गाँधी इसी सांस्कृतिक स्वायत्ता की बात बार-बार कर रहे थे। गांधी के यहाँ इस सभ्यता का पूर्णतः नकार था, यह गाँधी की दृष्टि की एक सीमा हो सकती है। किसी भी विचार या विचारधारा से हम पूर्णतः खुद को अलग नहीं कर सकते और न ही यह संभव है कि उनका हम पर कोई प्रभाव न पड़े। आवश्यकता इस बात की है कि सभी में एक संतुलन बना रहे। आज का समय इसी संतुलन को बनाने में असक्षम प्रतीत हो रहा है। हर तरह के अतिशयता का विकराल रूप हमारे सामने मौजूद है। गाँधी के संबंध में इंद्रनाथ चौधरी ने लिखा है- "गाँधी पश्चिमिकरण के विरोधी थे, पश्चिम से कुछ सीखने के नहीं। उनका सोच इकहरा नहीं था, उसमें समावेशिकता थी।"[3] गाँधी जीवन और विचार दोनों स्तरों पर संशोधन पर बल देते हैं। किसी भी विचार या मान्यता से मोहाविष्ट या पुर्वग्रह ग्रसित होने से सचेत भी करते हैं।

गाँधी ने इस पुस्तक में जिस स्वराज की बात की हैं, वहाँ उनका सपना था कि उसपर किसी एक का या वर्चस्वशील व्यक्ति का अधिकार नहीं होगा बल्कि इस स्वराज पर सब का अधिकार होगा। इस स्वराज का एक अर्थ गाँधी ने आत्मानुशासन भी कहा। आज का दौर घोर असंयम का है। आज हम देख सकते हैं कि विकासशील देशों पर किस कदर विकसित देशों का प्रभुत्व है। शक्ति के केंद्रीकरण के पक्ष में गाँधी कभी नहीं थे। गाँधी कहते थे कि इस स्वराज को हासिल करने के लिए सभी को संघर्ष करना जरूरी है। किसी के दिलाने पर वह स्वराज नहीं परराज होगा। स्वराज के संबंध में गाँधी ने लिखा है- "हम अपने ऊपर राज करें वही स्वराज है; और वह

स्वराज हमारी हथेली में है।"[4] गाँधी के इस स्वराज के मॉडल में केवल अंग्रेजों से मुक्ति की बात नहीं है बल्कि अंग्रेजी राज से मुक्ति की बात है। गाँधी ने लिखा है- "आप बाघ का स्वभाव तो चाहते हैं, लेकिन बाघ नहीं चाहते। मतलब यह हुआ कि आप हिंदुस्तान को अंग्रेज बनाना चाहते हैं। और हिंदुस्तान जब अंग्रेज बन जाएगा तब वह हिंदुस्तान नहीं कहा जाएगा, लेकिन सच्चा इंग्लिस्तान कहा जाएगा। यह मेरी कल्पना का स्वराज नहीं है।"[5] गाँधी को अपनी हिंदुस्तानी संस्कृति, सभ्यता पर अधिक विश्वास था कि लाख आँधी आ जाए इसे कोई उड़ा नहीं सकता। इसकी जड़ में आत्मसंयम, आत्मनिग्रह और आत्मविस्तार हैं जो इसे जिलाए रखेंगी।

गाँधी धार्मिक व्यक्ति थे। धर्म का विनाश या उपेक्षा उन्हें किसी शर्त पर स्वीकार नहीं थी। उनका मानना था कि धर्म व्यक्ति को हिंसक होने से रोकता है। गाँधी ने लिखा है- "धार्मिक ठगों को आप दुनियावी ठगों से अच्छा पाएंगे।"[6] आज धर्म के नाम पर जो हिंसाएं हो रही हैं ऐसे धर्म की बात तो शायद गाँधी नहीं कर रहे थे, जहाँ धर्म मनुष्य से बड़ा हो जाए। गाँधी वर्तमान सभ्यता को किसी हाल में स्वीकार नहीं करना चाहते थे उनके अनुसार यह सभ्यता हमारा बिगाड़ करनेवाली है जो ऊपर से तो चमकदार है लेकिन अंदर से खोखला करनेवाली है। आज सभ्यता का विकास हम देख सकते हैं कि कैसे विकराल रूप में है। मनुष्य सभ्य होने के नाम पर जानवरों से भी अधिक असभ्य होता जा रहा है। जिस प्रकृति का वह हिस्सा है, जिस पर्यावरण में वह रहता है अपने लोभ-लाभ के आगे उनके जीवन को कुछ नहीं समझता। ऐसा करके यह सभ्यता प्रकृति के साथ-साथ समस्त मानवजाति के जीवन को मुसीबत में डाल रही है। प्रकृति का अंधाधुंध दोहन, उसके साथ अनियंत्रित छेड़-छाड़ के नतीजे के रूप में ग्लोबल वॉर्मिंग, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ओजोन छिद्र आदि समस्याएँ हमारे सामने हैं। गाँधी ने लिखा है- "सभ्यता ऊपर से तो सांत्वना देती है, लेकिन अंदर से चूहे की तरह कुतरकर खोखला कर देती है।"[7] गाँधी की यह बात आज बहुत हद तक सच होती दिख रही है। हम ऊपर से जितना साधन संपन्न होते जा रहे हैं अंदर से उतने ही खोखले। गाँधी ने वर्तमान सभ्यता को 'चंडाल सभ्यता' या मोहम्मद पैगंबर के शब्दों में शैतानी सभ्यता कहा। सभ्यता की तमाम बुराईयाँ बतायी अस्पताल को पाप का जड़ कहा, रेल को महामारी फैलानेवाला बताया, वकीलों को झगड़ा-फसाद कम करनेवाला नहीं पैसै कमानेवाला बताया। सभ्यता के विकास में मानवीय मूल्य किस कदर नष्ट हो रहे हैं, इसकी चिंता गाँधी को थी। ये सारी बातें कुछ हद तक सही है लेकिन हम इनको अंतिम सत्य मानकर जड़ नहीं रह सकते। समय के साथ सबको चलना पड़ता है। गाँधी बहुत हद तक यथास्थितिवादी थे। रामराज्य की कल्पना, वर्णाश्रम धर्म का संरक्षण आदि ऐसी स्थिति है, लेकिन आज के रामराज्य की परिकल्पना से वह बिल्कुल भिन्न स्थिति थी।

'हिंद स्वराज' को पढ़ते हुए जो एक बात खटकी कि गाँधी की दृष्टि स्त्रियों को लेकर बहुत प्रगतिशील नहीं थी, स्त्रियों के प्रति उनकी दृष्टि भी संकीर्ण थी, जिनमें बाद के दिनों बदलाव आना लाजमी था। गाँधी ने लिखा है- "यह सभ्यता तो अधर्म है और यूरोप में इतने दरजे तक फैल गई है कि वहाँ के लोग आधे पागल जैसे देखने में आते हैं। उनमें सच्ची कूवत नहीं है; वे नशा करके अपनी ताकत कायम रखते हैं। एकांत में वे बैठ नहीं सकते। जो स्त्रियाँ घर की रानियाँ होनी चाहिए, उन्हें गलियों में भटकना पड़ता है, या कोई मजदूरी करनी पड़ती है। इंग्लैंड में ही चालीस लाख गरीब औरतों को पेट के लिए सख्त मजदूरी करनी पड़ती है, और आजकल इसके कारण 'सफ्रेजेट' का आंदोलन चल रहा है।"[8] इस कथन से यह लगता है कि गाँधी भी स्त्रियों के घर में रानी बने रहने को श्रेष्ठ समझते थे। घर के चारदिवारी में रहना स्त्रियों का धर्म समझते थे। स्त्रियों का बाहर निकलकर काम करना सभ्यता की लाचारी समझते थे। भटकन बहुत कुछ सिखाती है। आग में जलकर ही सोना निखरता है। स्त्री और पुरुष के बीच समानता के लिए आवश्यक है कि सभी जगह दोनों की भागीदारी समान हो। यह समानता शोषणमुक्त समाज के लिए आवश्यक है। गाँधी जॉन रस्किन से प्रभावित थे। गाँधी रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' से प्रभावित होकर इसका अनुवाद हिंदी में 'सर्वोदय' नाम से किया। गाँधी के सर्वोदय सिद्धांत में सभी के उदय की बात है, आगे चलकर इसमें समानता की यह दृष्टी जरूर रही होगी।

गाँधी पर जैन, बौद्ध, बाइबिल, टालस्टाय, गोपाल कृष्ण गोखले, भगवद्गीता आदि का प्रभाव था। गाँधी को हम पूर्णतः आधुनिकता विरोधी भी नहीं पाते हैं, उनमें परंपरा और आधुनिकता का समन्वय भी था तथा रूढ़ि और मशीनीकरण का विरोध भी।

आज का समय जब यंत्र से बढ़कर यांत्रिकता की ओर बढ़ गया है गाँधी को इसी का डर था। इसी कारण गाँधी सभ्यता को पाप कहते हैं। गाँधी का बल हमेशा से आंतरिक समृद्धि पर रहा है, बाह्य समृद्धि की अपेक्षा। गाँधी ने लिखा है- “सभ्यता वह आचरण है जिससे आदमी अपना फ़र्ज़ अदा करता है। फर्ज अदा करने के मानी हैं नीति का पालन करना। नीति के पालन का मतलब है अपने मन और इंद्रियों को बस में रखना। ऐसा करते हुए हम अपने को (अपनी असलियत को) पहचानते हैं। यही सभ्यता है। इससे जो उल्टा है वह बिगाड़ करने वाला है।”[9] इसी कारण गाँधी के कल्पना के रामराज्य में किसी धर्म, संप्रदाय के प्रति कट्टरता नहीं दिखती। उनका मानना था कि सभी धर्म एक ही ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न-भिन्न रास्ते हैं। उनके यहाँ सभी धर्मों के बीच सद्भाव की बात है। गाँधी भारत की विविधता को स्वाभाविक मान स्वीकारने की बात करते हैं अन्य मान नकारने या घृणा की बात नहीं करतें। उनके एक राष्ट्र की कल्पना में सभी धर्मों के लिए स्थान है। गाँधी ने लिखा है- “हिंदुस्तान में चाहे जिस धर्म के आदमी रह सकते हैं; उससे वह एक राष्ट्र मिटनेवाला नहीं है। जो नए लोग उसमें दाखिल होते हैं, वे उसकी प्रजा को तोड़ नहीं सकते, वे उसकी प्रजा में घुलमिल जाते हैं। ऐसा हो तभी कोई मुल्क एक-राष्ट्र माना जाएगा। ऐसे मुल्क में दुसरे लोगों का समावेश करने का गुण होना चाहिए। हिंदुस्तान ऐसा था और आज भी है। यों तो जितने आदमी उतना धर्म ऐसा मान सकते हैं। एक-राष्ट्र होकर रहने वाले लोग एक-दूसरे के धर्म में दखल नहीं देते; अगर देते हैं तो समझना चाहिए कि वे एक-राष्ट्र होने के लायक नहीं है। अगर हिंदू मानें कि सारा हिंदुस्तान सिर्फ हिंदुओं से भरा होना चाहिए, तो यह एक निरा सपना है। मुसलमान अगर एसा मानें कि उसमें सिर्फ मुसलमान ही रहें तो उसे भी सपना ही समझिए। फिर भी हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, जो इस देश को अपना वतन मानकर बस चुके हैं एक-देशी, एक-मुल्की हैं, और उन्हें एक-दूसरे के स्वार्थ के लिए भी एक होकर रहना पड़ेगा।”[10] गाँधी विविधता में एकता की बात तब करते हैं जब स्थिति आज की तरह भयावह नहीं थी। आज हिंदू-मुसलमान के नाम पर जो फसाद हमारे सामने खड़े हैं ऐसे में गाँधी की ये पंक्तियाँ बेहद प्रासंगिक लगती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण आशीष नंदी ने गाँधी को ‘क्रिटिकल ट्रैडिशनलिस्ट’ कहा है। गाँधी में परंपरा के प्रति अंध श्रद्धा नहीं है बल्कि परंपरा के प्रति जागरुकता है। गाँधी ने जिस अध्यात्म की बात की है उसका संबंध बाह्य कर्मकांडों से न होकर आंतरिक शुद्धता से है, किसी के प्रति घृणा या नफरत से नहीं है बल्कि सबके साथ सद्भाव से है। गाँधी के रामराज्य में राम-कृष्ण, ईश्वर-अल्लाह सबके प्रति श्रद्धा है।

संदर्भ सूची

1. गाँधी, महात्मा, ‘हिंद स्वराज’, शिक्षा भारती, दिल्ली, संस्करण : 2017, पृ. सं. : 7

2. वही, पृ. सं. : 44

3. ‘हिंदी साहित्य ज्ञानकोश’, खंड-6, प्रधान संपा.- शंभुनाथ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2019, पृ. सं. : 2972

4. गाँधी, महात्मा, ‘हिंद स्वराज’, शिक्षा भारती, दिल्ली, संस्करण : 2017, पृ. सं. : 48

5. वही, पृ. सं. : 21

6. वही, पृ. सं. : 31

7. वही, पृ. सं. : 31

8. वही, पृ. सं. : 27

9. वही, पृ. सं. : 45

10. वही, पृ. सं. : 35-36

....